गटमैन संचयी मापनी विधि
(Guttman Comulative Scaling Method) —

इस विधि का प्रतिपादन द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिकन सैनिकों की मनोवृत्ति के अध्ययन के लिए गटमैन द्वारा 1950 ई० में किया गया। इस विधि को स्केलोग्राम विश्लेषण विधि (Scalogram analysis method) भी कहा जाता है। इस विधि का मूल तत्व यह है कि इस विधि द्वारा मनोवृत्ति मापने के लिए एक ऐसी मापनी बनायी जाती है जिसके सभी एकांश एक ही विमा का मापन करते हैं। इसलिए इसे एक विमीय मापनी (Unidimensional Scale) भी कहा जाता है। मुख्य विशेषता यह होती है कि इसके कुल प्राप्तांक के आधार पर किसी एकांश विशेष पर की गयी अनुक्रिया के बारे में आसानी से पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

गटमैन विधि द्वारा मनोवृत्ति मापनी बनाने के लिए निम्नांकित चरणों से गुजरना होता है —

→ मनोवृत्ति वस्तु से संबंधित बहुत सारे कथन या एकांश

तैयार कर लिये जाते हैं, जिनसे एक ही तरह की मनोवृत्ति का पता चलना चाहिए। इसे गटमैन ने कथनों की समष्टि (Universe of items) कहा है।

→ कथनों की इस समष्टि से लगभग 20 कथनों को शोधकर्ता अपने अनुभव एवं सहकर्मियों के आधार पर चुन लेता है जिनमें सभी कथन समवाचीय होते हैं।

→ सभी कथनों के लिए दो-दो अनुक्रिया विकल्प जैसे- सहमत-असहमत या तीन जैसे- सहमत-तटस्थ-असहमत के द्वारा अनुक्रिया करना होता है। सभी ऐसे कथनों को करीब 100 प्रयोज्यों पर क्रियान्वित किया जाता है।

→ सभी कथनों पर किये गये अनुक्रियाओं का अंकन किया जाता है और सभी अंकों को जोड़कर कुल प्राप्तांक प्राप्त कर लिया जाता है।

→ कुल प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक प्रयोज्य को उच्चतम से न्यूनतम की ओर एक क्रम में सजाया जाता है।

→ अंतिम चरण में इस बात का निर्धारण किया जाता है कि 'सहमत' में अनुक्रिया करने वाले व्यक्ति कहाँ तक उच्चतर प्राप्तांक के साथ ~~अनुक्रिया~~ संगति रखते हैं। इसी प्रकार 'असहमत' में अनुक्रिया करने वाले व्यक्ति कहाँ तक निम्नतम प्राप्तांक के साथ संगति रखते हैं। यदि इनमें संगति अधिक होती है, तो मापनी को एक विश्वसनीय समझा जाता है।

गटमैन विधि के कुछ गुण एवं अवगुण—

गुण —

* इस विधि में यदि किसी व्यक्ति का कुल प्राप्तांक पता चल जाता है, तो प्रत्येक कथन पर व्यक्ति की अनुक्रिया का पैटर्न को बतलाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

* इस विधि द्वारा तैयार मापनी में समकालीयता का गुण बहुत अधिक होता है।

* इस विधि में कथनों की एकविमियता का पता रहता है इसलिए शोधकर्ता को प्रयोज्यों के उत्तरों में असंगति एवं अन्य त्रुटियों का पता चल जाता है।

अवगुण

* गटमैन मापनी विधि का प्रयोग सिर्फ उन्हीं कथनों के लिए किया जा सकता है, जिसका उत्तर 'सहमत' या 'असहमत' के रूप में देना संभव है।

* इस विधि द्वारा एकांशों का चयन शोधकर्ता के अनुभव एवं सहज-ज्ञान पर आधारित होता है, न कि किसी वैज्ञानिक विधि द्वारा, जिससे एकांशों के चयन में त्रुटियों की संभावना काफी बढ़ जाती है।

* व्यावहारिक दृष्टिकोण से किसी शोधकर्ता के लिए एक विमीय मनोवृति मापनी का निर्माण करना काफी कठिन होता है।

इन अवगुणों के बाद भी गटमैन मापनी विधि का प्रयोग राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक मनोवृतियों का मापने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

Scanned with CamScanner